06:42 90
Navajyoti- ajmer-cit...
PDF reader

अनुसंधान केंद्र के निदेशक डा. चेतन भारद्वाज ने मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने तथा खेती को लाभकारी एवं टिकाऊ बनाने के लिए वैज्ञानिक कृषि पद्धतियां अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने संतुलित उर्वरक प्रयोग को आवश्यकता बताई। उन्होंने फसल अवशेषों को जलाने के बजाय उनका उचित प्रबंधन करने तथा एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन, कीट-रोगनाशक-मुक्त भारतीय मसाला उत्पादन विषय पर व्याख्यान दिया। जी. के. त्रिपाठी भी मौजूद रहे। संचालन वैज्ञानिक डॉ. शिव लाल ने किया। कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों के साथ कार्य नेरेंद कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर एवं उससे संबद्ध महाविद्यालयों के 165 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

राज्य सरकार से निःशुल्क भूमि व बजट की करेंगे मांग

कराने के लिए चार कॉन्सिल ऑफ राजस्थान ने महत्वपूर्ण पहल की है। चार कॉन्सिल की कार्यकारिणी समिति ने अजमेर में अधिवक्ता भवन निर्माण का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया है। अब इस संबंध में राज्य सरकार से निशुल्क भूमि आवंटित करने और भवन निर्माण सिंह शेखावत को अध्यक्षता में जोधपुर स्थित कार्यालय में हुई। बैठक में कांफ्रेंस, कि राजस्थान राजस्व मंडल न्यायालय अजमेर में स्थित होने के कारण प्रदेश के विभिन्न जिलों से अधिवक्ताओं को राजस्व मामलों की पैरवी के लिए अजमेर जाना पड़ता है। ऐसे में अधिवक्ताओं को सुविधा के लिए अजमेर में भी जयपुर और जोधपुर की तर्ज पर अधिवक्ता भवन बनाए जाना आवश्यक है। इस मांग को लेकर चार कॉन्सिल अध्यक्ष की उपलब्ध कराने का प्रस्ताव रखा। बैठक में अधिवक्ताओं के नाम परिवर्तन और नाम के आगे डॉ. लगाने संबंधी आवेदनों पर भी निर्णय लिया गया। वहीं राजस्थान अधिवक्ता कल्याण कोष की न्यायी समिति ने 94 मृत, 89 बीमारी और 29 सेवानिवृत्ति दावों सहित कुल 209 दावों के भुगतान को मंजूरी दी। इसके अलावा चार कॉन्सिल की पेंशनर समिति ने लगभग 2400 नए अधिवक्ताओं का पंजीयन किया।

सितार की सम्मोहन भरी धुन पर श्रोता हुए मंत्रमुग्ध

एस. एम. लोढ़ा फाउंडेशन की 20 वीं सांस्कृतिक संध्या : प्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद शुजात खान ने दी





काम/अजमेर। प्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद शुजात खान ने जब अपनी अंगुलियों को सितार पर नचाया तो सामने बैठे श्रोता मंत्रमुग्ध हो उठे। श्रोता खान की इस सम्मोहन भरी धुन को सुनते ही रहे, उन्हें पता ही नहीं चला कि लगभग दो घंटे कब बीत गए। यही कारण रहा कि जब उन्होंने कार्यक्रम समाप्त करने की घोषणा की तो सभी दर्शक एकस्वर में बोल उठे-'वन मोर'। दर्शकों की इस मांग के सामने वे फिर से अपनी करिश्माभरी जादुई अंगुलियों को सितार पर घुमाकर मस्तीभरी धुन निकालने लगे। यह दुआ वो शनिवार को सांय एस. एम. लोढ़ा फाउंडेशन द्वारा आयोजित 20 वीं सांस्कृतिक संध्या का, जो राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सभागार में आयोजित की गई थी। ए डैलिंग सिम्फनी और सितार एंड राजस्व नाम से आयोजित हुई यह संध्या प्रत्येक श्रोता को प्रभावित कर गई। चूंकि प्रसिद्ध सितार वादक विलायत खान के पुत्र व शिष्य शुजात खान ने ना केवल सितार बजाया, बल्कि उसके साथ गायन भी किया। उन्होंने पारंपरिक शास्त्रीय राग की प्रस्तुति से शुरुआत की। राग समय कल्याण में आलाप, जोड़ की प्रस्तुति दी। तबले के साथ उन्होंने रचना प्रस्तुत की। फिर शंकर भगवान की रचना दर्शन देजो शंकर महादेवा सुनाई। इसके पश्चात् कबीरदास व अमीर खुसरो के बोल पर भक्तियाना अंदाज में अपनी प्रस्तुति दी। जिन्हें दर्शकों ने खूब सराहा।

छाप तिलक सब छीनी.....पर बजी तालियां

छाप तिलक सब छीनी और जिंदगी से बड़ी सजा ही नहीं और क्या जुर्म है पता ही नहीं जैसी रचनाओं ने दर्शकों से खूब तालियां बजवाईं। इनके अलावा खमाचोप लय है, झुकी हैं पलकें, ये शजान सी निगाहें ये साकाय ये अदाएं, घुलाने में जिसको जमाने लगे हैं, वो ही मुझको फिर याद आने लगे हैं, वैष्णव जन तो तेने कहिए, रात कटती नहीं दिन गुजरता नहीं, रानी बेटी राज करेगी, अे पालनहारे जैसी रचनाएं सितार बजाते हुए सुनाईं। तबले पर सपन अेनारिया व शारिक मुस्तफा तथा ढोलक पर प्रतीक ने संगत दी। प्रारंभ में संगीत व संबित ने गाइने गणपति जग वंदन से गणेशजी की वंदना की। प्रारंभ में फाउंडेशन की स्मृति मेहता व तृप्ति जैन आदि ने अतिथियों का स्वागत किया।

बारह कलाकारों की कलाकृतियों की प्रदर्शनी

इस अवसर पर देशभर से आए बारह कलाकारों की कलाकृतियों की प्रदर्शनी भी वहां लगाई गई। जिन्हें दर्शकों ने देखकर सराहा। इन कलाकारों में चूरू के शिव सोनी, दिल्ली की सुरभना मंडल, सूरज काशी, मनीष राव, सौमेन पंडा, समीर मोहंती, नमिता निर्मल आदि शामिल हैं।

खास लोगों के लिए बना है शास्त्रीय संगीत : शुजात खान

खास/अजमेर।

प्रसिद्ध सितार वादक वादक उस्ताद शुजात खान का कहना है कि शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत में कुछ अंतर है। शनिवार को दैनिक नवज्योति से हुई विशेष भेंट में उन्होंने बताया कि शास्त्रीय संगीत कुछ खास लोगों के लिए बना है। जिसे खास लोग ही सुनने आते हैं। फिल्मी संगीत को कोई भी सुनने आ जाता है। उसे सब पसंद कर सकते हैं। लेकिन शास्त्रीय संगीत को वही पसंद करता है, जिसको इसमें विशेष रुचि होगी या जो इसमें समझ रखेगा। यह हरेक व्यक्ति के लिए होता भी नहीं है। सितार को लोग शौक से सुनने आते हैं। यह फिल्म्स म्यूजिक नहीं है। शास्त्रीय संगीत खास लोगों के लिए बना है।

एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि मैं सितार बजाता हूं। जैसा मैंने बड़ों से सीखा और सुना वैसा बजाता हूं। कार्यक्रमों में लोग नहीं आएंगे या कम आएंगे तो उससे शास्त्रीय संगीत मरने वाला है नहीं। कोई व्यक्ति तीन मिनट के गीतों से खुश है तो रहे। लेकिन मैं ऐसी प्रस्तुति ही दूंगा, जिन्हें आप अपने परिवार के साथ सुन सकें। उन्होंने कहा कि युवाओं को हर चीज को देखना चाहिए। ऐसे में उन्हें शास्त्रीय संगीत को भी देखना चाहिए। यदि उन्हें अच्छा लगे तो इसे अपनाना भी चाहिए। अपनी भावपूर्ण कला और विशिष्ट शैली के लिए प्रसिद्ध खान ने कार्नेगी हॉल न्यूयॉर्क, रॉयल अल्बर्ट हॉल, लंदन व यूनाइटेड नेशंस जनरल असेंबली हॉल में अपनी प्रस्तुति दी है। उनके चर्चित एलबम द रेन को वर्ष 2004 में ग्रेमी पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था। आशा भोंसले सहित कई कलाकारों के साथ उन्होंने प्रस्तुति दी है।

शरद पूर्णिमा : प्रकृति, सेहत और खेती से भी गहरा नाता



अतिथि लेखक: डॉ. श्रीगोपाल काबरा

शरद पूर्णिमा केवल धार्मिक आस्था और परंपराओं का पर्व नहीं, बल्कि इसका संबंध प्रकृति, स्वास्थ्य और खेती से भी जोड़ा जाता है। इस दिन चांदनी में खीर रखने की परंपरा सदियों पुरानी है। आयुर्वेद में शरद ऋतु के दौरान शरीर में बढ़ने वाली गर्मी और पित्त को शांत रखने पर विशेष जोर दिया गया है। मान्यता है कि शरद पूर्णिमा की शीतल चांदनी शरीर और मन को शांति प्रदान करती है।

शरद पूर्णिमा पर खुले आसमान के नीचे दूध और चावल की खीर रखने की परंपरा का आयुर्वेद में विशेष महत्व बताया गया है। पारंपरिक मान्यता के अनुसार चंद्रमा की शीतल किरणों के संपर्क में आने वाली खीर स्वास्थ्य के लिए लाभकारी मानी जाती है। इसे पाचन, त्वचा और श्वसन संबंधी समस्याओं में उपयोगी माना जाता रहा है। हालांकि इन स्वास्थ्य लाभों की आधुनिक वैज्ञानिक पुष्टि के लिए और शोध की आवश्यकता है। प्राचीन आयुर्वेदिक परंपराओं में इस रात औषधीय पौधों के संग्रह और उनके उपयोग को भी विशेष महत्व दिया गया है।

शरद पूर्णिमा का समय खेती के लिहाज से भी महत्वपूर्ण है। इस दौरान खरीफ की फसलें पककर तैयार होती हैं और किसान गेहूं, चना तथा सरसों जैसी रबी फसलों की बुवाई की तैयारी करते हैं। मौसम में बदलाव के साथ रात में ओस पड़ने लगती है, जिससे मिट्टी की नमी प्रभावित होती है। पारंपरिक खेती में चंद्रमा की कलाओं के अनुसार बुवाई और बीजों के उपचार को भी मान्यताएं रही हैं। हालांकि चंद्रमा की रोशनी से बीजों की अंकुरण क्षमता या कीटों से लड़ने की शक्ति बढ़ने जैसे दावों की वैज्ञानिक पुष्टि अभी आवश्यक है। भारत की पारंपरिक स्वास्थ्य और कृषि पद्धतियों को आधुनिक विज्ञान से जोड़कर उपयोगी परिणाम हासिल किए जा सकते हैं। इसके लिए आयुष मंत्रालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय मिलकर मौसमी खानपान, चंद्रमा के चक्र और खेती के बीच संबंधों पर शोध कर सकते हैं। इससे पर्यावरण के अनुकूल खेती की नई संभावनाएं सामने आ सकती हैं और रासायनिक खादों पर निर्भरता कम करने के उपाय खोजे जा सकते हैं।

शरद पूर्णिमा पर आज चंद्रमा की किरणों से बरसेगा अमृत

घर-मंदिरों में होगी लक्ष्मीजी की पूजा-अर्चना, औषधीय खीर का बटेगा प्रसाद

खास/अजमेर।

आश्विन मास की पूर्णिमा रविवार को शरद पूर्णिमा के रूप में मनाई जाएगी। इस अवसर पर लोग दान पुण्य करेंगे। मंदिरों व घरों में भगवान सत्यनारायणजी की कथा सुनकर प्रसाद वितरित किया जाएगा। मान्यता है कि इस पूर्णिमा पर दिखाई देने वाले चंद्रमा की किरणों से अमृत वर्षा होती है। यही कारण है कि इस दिन मंदिरों व घरों में सांयकाल खीर बनाकर उसे चंद्रमा की रोशनी में रखने की परंपरा है। ताकि चंद्रमा से निकलने वाली किरणों की अमृत वर्षा खीर में हो। यह खीर प्रसाद के रूप में वितरित की जाती है। जब भगवती लक्ष्मीजी को भी प्रसन्न करने का यही पर्व है। धार्मिक मान्यता है कि इस पूर्णिमा से वर्ष भर प्रत्येक पूर्णिमा को गोपी गीत का पाठ करने से महालक्ष्मी जी प्रसन्न होती हैं। भक्तों और उनके परिवार को भरपूर धन-धान्य देती हैं।



भगवान श्रीकृष्ण ने रचाया था महारास

आगरागेट स्थित भगवान श्रीगणेश प्राचीन मंदिर के महंत पं. धनश्यामाचार्य ने बताया कि शरद पूर्णिमा को ही जागरी पूर्णिमा या रास पूर्णिमा भी कहा जाता है। ज्योतिष के अनुसार, पूरे साल में केवल इसी दिन चन्द्रमा अपनी सम्पूर्ण सोलह कलाओं से परिपूर्ण होता है। हिन्दू धर्म में इस दिन कोजागर व्रत माना गया है। इसे को कौमुदी व्रत भी कहते हैं। इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने गोपियों के संग महारास रचाया था। मान्यता है इस रात्रि को चन्द्रमा की किरणों से अमृत की वर्षा होती है। इस दिन उत्तर भारत में खीर बनाकर रात भर चांदनी में रखने का विधान है।

आयुर्वेद में भी महत्व

आयुर्वेद में भी इस दिन का विशेष महत्व है। इसीलिए आयुर्वेद से जुड़े लोग इस दिन विभिन्न प्रकार की दवाइयां रात्रि को चंद्रमा की रोशनी के नीचे तैयार करते हैं। कई स्थानों पर दवाई वितरित की जाती है। विशेष रूप से दमा की औषधि वितरित की जाती है।

निम्बार्क कोट मंदिर में भजन संध्या आज

श्री निम्बार्क कोट मंदिर में श्री शरद रास महोत्सव भजन संध्या के साथ शरद पूर्णिमा उत्सव मनाया जाएगा। आर्गेनाइजर्स ने बताया कि भजन संध्या रात्रि 10 बजे से होगी।

लक्ष्मी माता की होगी पूजा

शरद पूर्णिमा पर बंगाली समाज लक्ष्मी माता की विशेष पूजा करेगा। बंगाली समाज द्वारा शरद पूर्णिमा को माता लक्ष्मीजी और दीपावली पर काली माताजी की पूजा अर्चना की जाती है।

औषधीय खीर होगी वितरित

शरद पूर्णिमा पर रविवार को रात्रि 12 बजे से श्री हर्षा आयुर्वेदिक स्टोर, कचहरी रोड पर औषधीय खीर का वितरण किया जाएगा। खीर को प्राप्त करने के लिए पंजीकरण कराना आवश्यक है। निदेश शर्मा व वीरव शर्मा ने बताया कि रात 12 बजे से खीर का वितरण शुरू होगा। इच्छुक लोगों को शाम सात बजे तक स्टोर पर पहुंचकर अपना पंजीकरण कराना होगा।

महाराजा अजमेढ़ का जन्मोत्सव आज

पुष्कर। मेद क्षत्रिय स्वर्णकार समाज पुष्कर की ओर से समाज के आराध्य देव महाराजा अजमेढ़ा का जन्मोत्सव रविवार को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। समाज के अध्यक्ष मनीष सोनी ने बताया कि श्री महाराजा अजमेढ़ा चैरिटेबल ट्रस्ट के नया स्वर्णकार भवन में रविवार को शाम 4 बजे दीप प्रज्वलन के साथ जयंती महोत्सव का विधिवत शुभारंभ होगा। इसके बाद बच्चों एवं युवाओं के लिए विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। शाम 6 बजे समाजबंधुओं की उपस्थिति में महाराजा अजमेढ़ा की विशेष पूजा-अर्चना एवं महाआरती की जाएगी। इसके पश्चात प्रसाद वितरित किया जाएगा। महोत्सव के सफल आयोजन के लिए समाज के संरक्षक राजेंद्र भंवरा व हरिप्रसाद खातवेदिया, महामंत्री प्रमोद भंवरा, उपाध्यक्ष विकास भंवरा, कोषाध्यक्ष राजकुमार जालोरिया, सह कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद सनवाल, मंत्री नीरज अंशीवा, नवीन भंवरा, विधि सलाहकार प्रवीण भंवरा, पूर्वा मंत्री संजय सहदेवड़ा तथा कार्यकारिणी सदस्य जितेंद्र बंकेरवाल, गणेश भंवरा, दीपक धूपड़ एवं मधुसूदन भंवरा आदि की विभिन्न व्यवस्थाओं की जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं।



देव पूजन के साथ संगीतमय श्रीरामचरित मानस पारायण महायज्ञ शुरू

समस्त मानस मण्डल का वार्षिकोत्सव

काम/अजमेर। श्री समस्त मानस मण्डल का 19वां वार्षिकोत्सव पर दो दिवसीय सामूहिक आगरे पर 36 घण्टों का संगीतमय श्री रामचरितमानस पारायण महायज्ञ का शुभारंभ



कार्तिक स्नान आज से, एक माह तक चलेगा दान-पुण्य का दौर

खास/अजमेर।

आश्विन मास की पूर्णिमा पर रविवार से कार्तिक स्नान प्रारंभ होगा। जो एक माह अर्थात् कार्तिक मास की पूर्णिमा तक जारी रहेगा। इस दौरान श्रद्धालु सुबह जल्द स्नानादि कर बीठाकुरजी की पूजा अर्चना करेंगे। मंदिरों में जाकर कार्तिक मास की कहानी सुनेंगे। सनातनी परंपराओं में वैशाख व कार्तिक मास को बड़े मास या पवित्र मास की संज्ञा दी गई है। इसीलिए इन महीनों के दौरान विशेष धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। पकोड़ासी से पूर्णिमा तक विशेष पूजा अर्चना की जाती है। इन पांच दिनों को पंचतीर्थ कहते हैं। इस दौरान लोग तीर्थों में जाकर पूजा अर्चना करते हैं। कार्तिक मास में सामूहिक

निर्मल आचरण और प्राणी मात्र के कल्याण की भावना रखना ही धर्म

जिनशासन तीर्थ क्षेत्र, नाका मदार में शरदोत्सव व गुरुद्वय अवतरण महापर्व का शुभारंभ

खास/अजमेर।

आचार्य विद्यासागर महाराज व आचार्य समयसागर महाराज का अवतरण दिवस 26 अक्टूबर को शरद पूर्णिमा के अवसर पर मनाया जाएगा। इस अवतार पर श्री जिनशासन गौरव भूमि प्रयायोग समिति के तत्वाधान में जिनशासन तीर्थ क्षेत्र, नाका मदार में शनिवार से त्रिदिवसीय शरदोत्सव व गुरुद्वय



संतों के बताए मार्ग पर चलने का ले संकल्प

पूजन के पश्चात निर्यापक सागर महाराज व विशुद्ध सागर महाराज ने प्रवचन में कहा कि संतों की याद में आयोजित होने वाले समारोह हमें उनके आदर्शों पर चलने की प्रेरणा देते हैं। ऐसे आयोजनों को करके हमें उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प भी लेना चाहिए। तभी ऐसे आयोजन सार्थक सिद्ध होते हैं। समाधिस्थ आचार्य विद्यासागर जी महाराज का संपूर्ण जीवन त्याग, तपस्या, करुणा, आत्मसंयम और जनकल्याण की प्रेरणा देते वाला रहा है। उन्होंने अपने जीवन एवं साधना के माध्यम से समाज को धर्म के वास्तविक स्वरूप से परिचित कराया। धर्म केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि अपने आचरण को निर्मल बनाना, दूसरों के प्रति करुणा रखना, जरूरतमंदों की सेवा करना और प्रत्येक प्राणी के कल्याण की भावना रखना ही धर्म का वास्तविक उद्देश्य है। सायंकाल आचार्य भक्ति हुई। इसके पश्चात् विविध वेशभूषा प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें बच्चों ने विभिन्न स्वरूप धारण कर अपनी प्रस्तुति दी।

III O <

दैनिक भास्कर
अजमेर 25-10-2026

सितार की झंकार • बोर्ड सभागार में एसएम लोढ़ा फाउंडेशन की शास्त्रीय संगीत संध्या

उस्ताद शुजात ने साधे सुर... भुलाने में जिन्हें जमाने लगे, वही फिर हमें याद आने लगे

सोशल रिपोर्टर | अजमेर

'भुलाने में जिन्हें जमाने लगे, वही फिर हमें याद आने लगे...' और 'ज़िंदगी से बड़ी सजा ही नहीं, और जुर्म है पता नहीं...' जैसी दिल को छू लेने वाली पंक्तियां जब सितार वादक शुजात खान के सुरों में सजीं तो शिक्षा बोर्ड ऑफिस सभागार मौजूद शहरवासी तल्लीनता से सुनते रहे। मौका था एसएम लोढ़ा फाउंडेशन की ओर से आयोजित 20वें कार्यक्रम 'द डैजलिंग सिम्फनी ऑफ सितार एंड गजल्स' का। करीब पौने दो घंटे तक संगीत की ये महफिल चली।

शुजात खान ने अपनी प्रस्तुति की शुरुआत शास्त्रीय राग परंपरा के अनुरूप राग यमन और कल्याण के स्वरों के साथ आलाप और जोड़ से की। सितार के सुरों ने धीरे-धीरे माहौल को संगीतमय बना दिया। इसके बाद उन्होंने गजलों के माध्यम से श्रोताओं के दिलों को छुआ। उनकी प्रस्तुति में शास्त्रीय संगीत की गहराई और गजलों की भावनात्मक अभिव्यक्ति का सुंदर मेल था। कार्यक्रम का समापन प्रस्तुति 'छाप तिलक सब छीनी रे, मोसे नैना मिलाइके...' से हुआ। इससे पहले सुरीति और समिल ने गणेश वंदना 'गाइए गणपति जग वंदन...' की प्रस्तुति से शुरुआत की। कपिल-प्रगति जैन, तृप्ति-राजेश जैन, प्रेरणा-संजीव सेठिया और स्मृति-सुदीप मेहता ने दीप प्रज्वलित किया तथा सेठ संपतमल लोढ़ा के चित्र पर माल्यार्पण किया। कार्यक्रम में पुष्पा लोढ़ा सहित प्रशासनिक अधिकारी और शहरवासी मौजूद रहे। संचालन देवांश सेठिया और समिल लोढ़ा ने किया। इस अवसर पर दिल्ली, जयपुर और चूरू से आए 11 चित्रकारों की पेंटिंग्स की प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसने आयोजन में दृश्य कला के रंग भी जोड़े।

भास्कर से संवाद: विरासत राह दिखा सकती, पहचान के लिए साधना जरूरी: खान





माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सभागार में शास्त्रीय संगीत संध्या में प्रस्तुति देते शुजात खान व मौजूद शहरवासी।

Q. शास्त्रीय संगीत में आगे बढ़ने के लिए विरासत कितनी महत्वपूर्ण?

– बिल्कुल नहीं। आज ऐसे कई युवा हैं, जिनके परिवारों का संगीत से कोई वास्ता नहीं है, लेकिन वे इस क्षेत्र में अपनी पहचान बना चुके हैं। कला साधना है। इसमें लगन, मेहनत और प्रतिभा की जरूरत होती है। व्यक्ति पूरी निष्ठा से प्रयास करे, तो वह संगीत में अपना मुकाम बना सकता है। विरासत रास्ता दिखा सकती है, लेकिन अपनी पहचान बनाने के लिए साधना जरूरी है।

Q. आज रील्स और सोशल मीडिया का दौर है। ऐसे में शास्त्रीय संगीत अपनी जगह कहां देखता है?

– शास्त्रीय संगीत की अहमियत आज भी उतनी ही है, जितनी पहले हुआ करती थी। कौन, क्या सुनना चाहता है, यह व्यक्ति के मन और स्वभाव पर निर्भर करता है। हर व्यक्ति की अपनी पसंद होती है। समय और माध्यम बदल सकते हैं, लेकिन संगीत का महत्व कम नहीं होता। शास्त्रीय संगीत का अपना-अलग आनंद और प्रभाव है।

Q. शास्त्रीय संगीत में नए प्रयोगों और नएपन को आप किस नजर से देखते हैं?

– नयापन होना चाहिए, लेकिन इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि संगीत का मूल स्वरूप, महत्व और मर्यादा बनी रहे। नए प्रयोगों में कोई बुराई नहीं है। बदलाव कला का हिस्सा है, लेकिन प्रयोग करते समय उसकी मूल भावना को समझना भी आवश्यक है।

Q. संगीत प्रेमियों, खासकर नई पीढ़ी के श्रोताओं से आप क्या कहना चाहेंगे?

– मैं यही कहूंगा कि शास्त्रीय संगीत को सुनिए और उसे अनुभव कीजिए। यह जरूरी नहीं कि पहली बार सुनते ही आप उसमें पूरी तरह खो जाएं लेकिन एक बार इसे ध्यान से सुनने का अनुभव जरूर लीजिए। शास्त्रीय संगीत का अपना अलग सुकून है, जिसे महसूस करने के लिए उसे समय देना पड़ता है।